आलसी बालक

पुरानी समय की बात थी। कपिल नाम का एक बालक देवपुर नाम के गाँव में रहता था। कपिल बड़ा आलसी स्वभाव का था तथा स्कूल में पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी नहीं रखता था। वह हमेशा खेल-कूद में तथा अनावश्यक कामों में अपना समय व्यतीत करना पसंद करता था।

एक दिन वह स्कूल के लिए यूनिफार्म पहनकर बैग में किताब कलम डालकर निकल पड़ा। उसके सभी साथियों अपना पाठ अच्छा से अभ्यास करके स्कूल आए थे। वह सोचता है ये बेचारे पुस्तक के कीड़े हैं इन्हें जीवन जीना नहीं आता है। बेचारे रोज पुस्तक के दास बनते हैं। मैं तो मेरा जीवन में आनंद लुंगा ही। स्कूल जाकर भी फिर से गुस्साए हुए अध्यापक का मुँह देखकर क्या करुंगा? वे तो गुस्से होकर कुछ गालियाँ ही बरसाएंगे। इसी लिए आज का दिन मैं अपना ढंग से उपभोगकरुंगा। स्कूल के पास में ही एक उद्यान था। उसने उस दिन स्कूल नहीं जाकर वहीं उद्यान में खेलने के लिए ठान लिया।

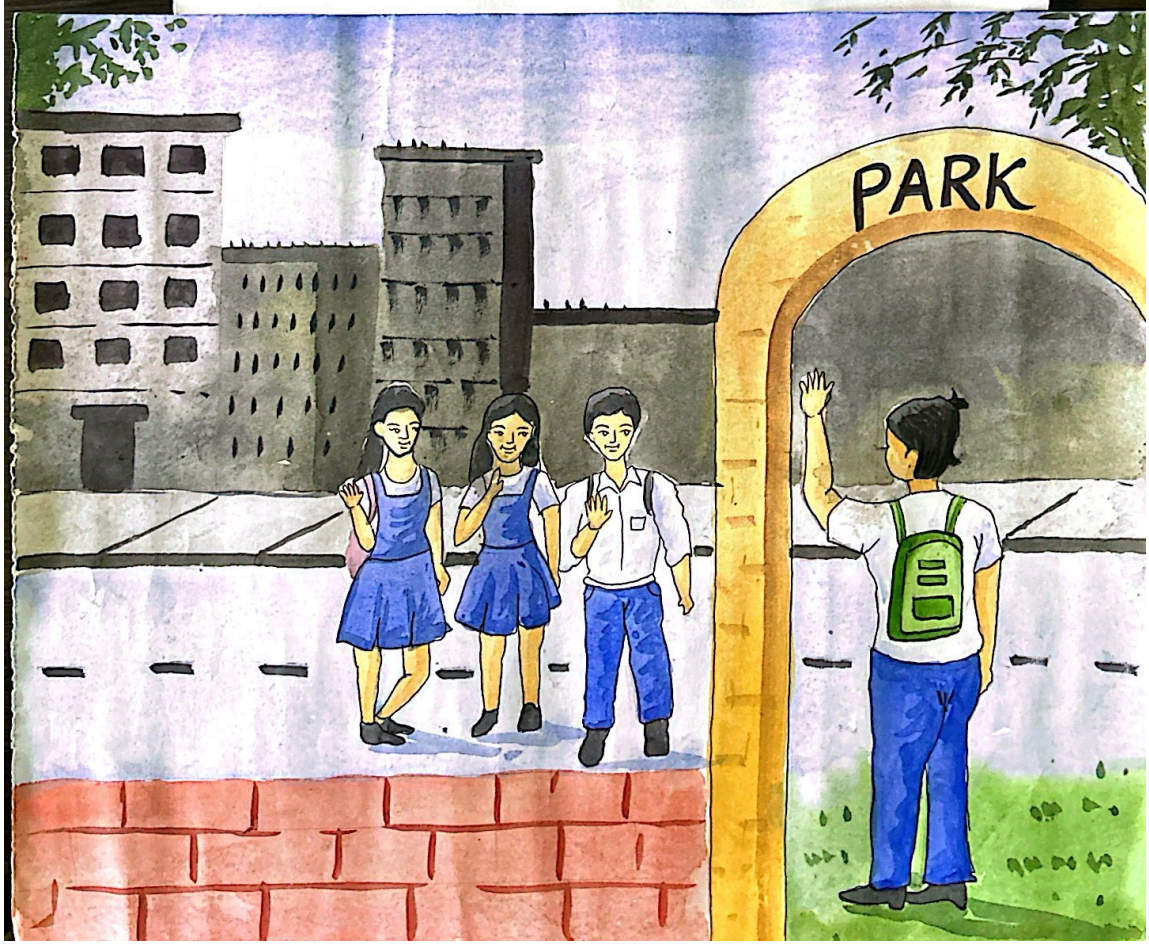

Scanned with CamScanner

उद्यान प्रवेशकर वह पहले बहुत खुस हुआ कि आज वह जी भरकर खेल लेगा। लेकिन कुछ देर के बाद वह चकित हो गया कि किसके साथ वह खेलेगा ?

उसके दृष्टि में फूलों में मंडराती हुई एक मधुमक्खी आ गयी। वह उसे कहने लगा आओ मेरे साथ खेलो। मधुमक्खी बोली मैं मधुसंग्रह करने में व्यस्त हूँ तुम्हारे साथ खेलने का वक्त्त नहीं है। बालक सोचने लगा यह सामान्य कीड़े में इतना घमंड ?

Scanned with CamScanner

चलो किसी और को ढूंढता हूँ। उद्यान में घास-फूस संग्रह करती हुई एक छोटी सी चिड़ियाँ को बुलाता है। बालक उससे कहने लगा अरे मित्र! इन सुखे हुए घास-फूस में क्या रखा है आओ मेरें पास बहुत स्वादिष्ट खाना है उसे खा लेते हैं और खेलते हैं खूब मज़ा आएगा। लेकिन चिड़ियाँ कहती है कि उसे आज घोसला बनाना हि है इसीलिए उसने कहा कि मैं तिनके के संग्रह में व्यस्त हूँ। इसीलिए मेरे पास खेलने का समय नहीं है। बालक सोचता है यह छोटी सी चिड़िया का इतना घमंड!! वह निराश हो जाता है।

Scanned with CamScanner

कुछ देर बाद उद्यान में घूमता हुआ एक कुत्ता उसके दृष्टि में आ जाता है वह कुत्ते से कहता है– अरे मनष्य का मित्र। इतनी गर्मी में कहाँ घूम रहे हो ? आओ मेरे पास। मैं तुम्हें बहुत से खाने के चीज़ दुंगा। कुत्ता कहता है बालक यह तो ठीक है लेकिन इस समय मैं मालिक की सेवा में लीन हूँ अतः तुम्हारे साथ खेलने का वक्त नहीं है।

Scanned with CamScanner

यह सुनकर बालक बहुत शर्मिन्दा हो गया। अहो! इस संसार में सब लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त हैं सिर्फ मैं ही भटकता हुआ घूम रहा हूँ। मुझे भी अपना काम करना चाहिए। अतः अभी मैं भी स्कूल के ओर चलता हूँ। ऐसा सोचकर वह स्कूल चला जाता है। उस दिन से उसने आलस्य का त्याग कर दिया तथा विद्यार्जन करके बहुत यश, सम्मान एवं धन अर्जन किया।

कहानी से हमे सीख मिलती है कि —

हमें जीवन में लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए तथा आलस्य त्याग देना चाहिए।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner